MT

Seat No. | | | | | | | |

2018 1100

MT - HINDI (ENTIRE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - II - PAPER - V

Time : 3 Hours **Preliminary Model Answer Paper** **Max. Marks : 100**

विभाग 1 - गद्य

उ.1.	**(क) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।**	**(8)**
(1)	(i) **निम्नलिखित गलत वाक्य सही करके फिर से लिखिए।**	**1**
	(1) रहमान ने लक्ष्मी को खाने के लिए चारा नहीं दिया था।	
	(2) दुखी होकर रमजानी ने लक्ष्मी के लिए राशन लाने हेतु करामत को पैसे दिए।	
	(ii) **उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**	**1**
	(1) रमजानी ने किसमें से बीस का एक नोट निकाला ?	
	(2) सानी में मुँह कौन मारने लगी ?	
(2)	(i) **किसने, किससे कहा ?**	**1**
	(1) रमजानी ने अपने पति करामत अली से कहा।	
	(2) रमजानी ने अपने पति करामत अली से कहा।	
	(ii) **कारण लिखिए।**	**1**
	(1) क्योंकि लक्ष्मी के लिए पुआल लाना था।	
	(2) क्योंकि लक्ष्मी के पीठ पर डंडे से पड़े घाव के दाग कुछ हल्के पड़ गए थे।	
(3)	**(i) परिच्छेद में से शब्द-युग्म छाँटकर लिखिए।**	**1**
	(1) दस - पंद्रह (2) दो - चार	
	(ii) विलोम शब्द लिखिए।	**1**
	(1) बिक्री × खरीदी (2) माँगना × देना	
(4)	यदि मैं करामत अली की जगह पर होता, तो बूढ़ी गाय को बेच या छोड़ देने की बात बिल्कुल नहीं करता; बल्कि उसकी ठीक से सेवा करता। उसके लिए दिन में दो वक्त के लिए सानी का प्रबंध करता। इसके लिए परिवार के अन्य सदस्यों को भी राजी कर लेता। भले ही मेरे पास पैसों की कमी होती, फिर भी सर्वप्रथम मैं गाय के लिए चारा जुटाने की व्यवस्था करता। यदि वह बीमार पड़ती, तो डॉक्टर को बुलाकर उसका इलाज करवाता। इस प्रकार मैं मानव धर्म का पालन कर गाय की सुरक्षा का प्रबंध करता।	**2**

उ.1. (ख) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए । **(8)**

(1) निम्नलिखित वाक्यों का क्रम ठीक करके वाक्य फिर से लिखिए। **2**

(i) हम सब अंजुना बीच पहुँचे।

(ii) अंजुना बीच पर युवाओं का दल अपनी मस्ती में डूबा रहता है।

(iii) अंजुना बीच गहरा और नीले पानीवाला है।

(iv) लेखक दिनभर पणजी शहर देखते रहे।

(2) समझकर लिखिए। **2**

(i) अंजुना बीच (ii) बेनालियम बीच

(iii) बेनालियम बीच (iv) अंजुना बीच

(3) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए। **2**

(i) नगर - शहर (ii) मीन - मछली

(iii) अश्म - पत्थर (iv) जवान - युवा

(4) मैं सागर तट पर अपने मित्रों के साथ घूमने गया था। मुंबई के गिरगाँव सागर तट की बात ही कुछ और है। शाम का समय था। शीतल हवा बह रही थी। समुद्र की लहरें किनारे की ओर आ रही थीं। उन्हें देखकर मेरा मन उल्लसित हो गया। एक के बाद एक लहर का आना मेरे मन में आनंद भर रहा था। समुद्र किनारे कई श्वेत वर्ण के बगुले पानी की लहरों के साथ खेल रहे थे। थोड़ी देर के बाद सूर्यास्त होने लगा। आसमान में तरह-तरह के रंग छा गए। उन्हें देखकर मुझे ऐसा लगा कि सचमुच प्रकृति ने आसमान के परदे पर अलग-अलग रंगों को बिखेर दिया है। उस सुहावने दृश्य को देखते समय मैं बहुत ही प्रफुल्लित हुआ। समुद्र के पानी पर उन रंगों का जादू देखने को मिला। मानो समुद्र उन रंगों में स्नान कर स्वयं पर वे सारे रंग चढ़ा रहा है। इस प्रकार सागर तट पर घूमते समय मैं फूला न समाया। **2**

उ.1. (ग) अपठित परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **(8)**

(1) (i) उत्तर लिखिए।

(1) ऐसी थी टीना की कार → चमचमाती व लाल रंग की **½**

(2) एक नि: श्वास छोड़ा इन्होंने → विनायक बाबू ने **½**

(ii) उत्तर लिखिए। **1**

(1) लाल जोड़े में सजी दुल्हन से कार की तुलना की गई है।

(2) खुरदरे स्वर में बातें करना ।

(2) (i) सत्य या असत्य पहचानकर लिखिए। **1**

(1) सत्य (2) असत्य

	(ii) उपर्युक्त गद्यांश से दो ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हो। (1) ताला - साइकिल स्टैंड के गेट पर क्या लगा था ? (2) गनपत - विनायक बाबू के अनुसार कौन ड्रग्स लेता है ?	**1**
(3)	**(i) पहेली में से समानार्थी शब्द ढूँढ़कर लिखिए।** (1) जेहन - दिमाग (2) लाल - सुर्ख	**1**
	(ii) रिक्त चौखट में उत्तर लिखिए। जैसे (1) **शक** → बेशक (2) **मतलब** → बेमतलब	**1**
(4)	यह बात किसी से छुपी नहीं है कि युवाओं में नशाखोरी की प्रवृत्ति बहुत ही तेजी से बढ़ी है । आज के युवक नशा करना अपना शौक समझते हैं । यह शौक उनकी आदत बन जाती है । नशे की गिरफ्त में आए युवक जब अपना मन चाहा नशा नहीं कर पाते हैं तो, कचरा बीनने, चोरी करने के कार्यों में लिप्त हो जाते हैं । कभी -कभी तो वे आयोडेक्स,पेट्रोल, केरोसीन का सेवन कर अपने नशे की प्यास बुझाते हैं । जिनसे उनको भयानक बीमारी हो जाती है और वे कम उम्र में तड़प - तड़प कर दम तोड़ देते हैं ।	**2**
	विभाग 2 - पद्य	
उ.2.	**(च) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**	**(6)**
(1)	**संजाल पूर्ण कीजिए।** 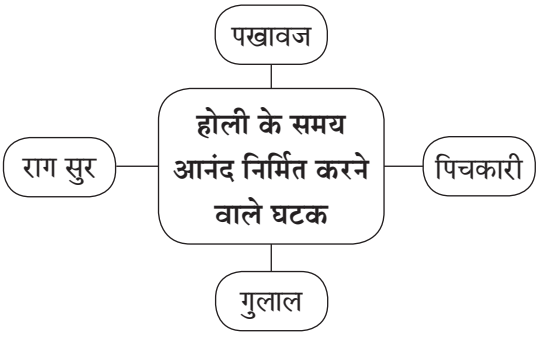 	**1**
(2)	**(i) कारण लिखिए।** (1) क्योंकि आसमान में गुलाल उड़ रहा है। (2) क्योंकि कृष्ण उनका इस भवसागर से बेड़ा पार लगाने वाले हैं।	**1**
	(ii) समझकर लिखिए। (1) शील व संतोष रूपी केसर (2) बिना करताल और पखावज के	**2**

(3)	**निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।** प्रस्तुत पद में मीराबाई कहती हैं- ''अब फागुन का महीना आया है। श्रीकृष्ण से अब मेरा जल्दी ही मिलन होनेवाला है। कृष्ण से मिलने की मेरी उत्सुकता अब बढ़ने लगी है। इसलिए मैं होली का त्योहार धूमधाम से मनाऊँगी। बिना करताल और पखावज बजे ही मेरी अंतरात्मा में झंकार उठ रही है। उस झंकार को सुनकर मेरी आत्मा कृष्ण से मिलने के लिए उत्सुक हो गई है। मैं बिना सुरों की सहायता से श्रेष्ठ राग गा रही हूँ। मेरा रोम-रोम रोमांचित हो गया है। मैंने शील व संतोष रूपी केसर घोलकर प्रेमरूपी पिचकारी बनाई है।''	**2**
उ.2.	**(छ) निम्न मुद्दों के आधार पर निम्न कविता का पद्य विश्लेषण कीजिए:**	**(6)**
(i)	**भारत महिमा**	
	(1) **रचनाकार का नाम:** जयशंकर प्रसाद	**1**
	(2) **रचना का प्रकार** : छायावादी आधुनिक काव्य	**1**
	(3) **पसंदीदा पंक्ति** : हिमालय के आँगन में उसे, किरणों का दे उपहार; उषा ने अभिनंदन किया, और पहनाया हीरक हार।	**1**
	(4) **पसंदीदा होने का कारण:** सूर्योदय होने से कुछ पल पहले उषा रूपी किरणों का हिमालय के आँगन में आगमन हुआ। भारत देश में उदित होने वाली उषा अपने साथ सुनहरी किरणों को लेकर आई। मानो वह भारत का अभिनंदन कर उसे हीरों का हार पहना रही हो। इसमें कवि ने मानवीकरण अलंकार के माध्यम से भारत की प्राकृतिक सुषमा का जो मनोहारी वर्णन किया है, वह अद्‌भुत व अतुलनीय है। अत: यह पंक्तियाँ मुझे अत्यंत प्रिय हैं।	**2**
	(5) **कविता से प्राप्त संदेश या प्रेरणा:** इस कविता से हमें यह संदेश प्राप्त होता है कि हमें अपने अतीत के गौरवशाली इतिहास को कभी नहीं भूलना चाहिए। हमें अपने देश पर गर्व होना चाहिए और इस पर अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।	**1**
	अथवा	
(ii)	**गजल**	
	(1) **रचनाकार कवि का नाम -** माणिक वर्मा	**1**
	(2) **रचना का प्रकार -** गजल	**1**
	(3) **पसंदीदा पंक्ति -** कोई ऐसी शक्ल तो मुझको दिखे इस भीड़ में, मैं जिसे देखूँ उसी में तुम मुझे अक्सर दिखो।	**1**
	(4) **पसंदीदा होने का कारण -** गजलकार कहते हैं कि दुनिया की इस भीड़ में कोई ऐसी शक्ल देखने के लिए मिल जाए, जिसे वह देखता है अर्थात् दुनिया की भीड़ में कोई अच्छा व्यक्ति कर्म के लिए आगे आए और सभी लोग उसकी प्रेरणा लेकर आगे आए । इस पंक्ति में कवि ने मानवता का सुंदर वर्णन किया है इसलिए यह पंक्ति मुझे बहुत पसंद है ।	**2**

(5) **रचना से प्राप्त प्रेरणा -** इस गजल से हमें यह प्राप्त होता है कि अपने रंग-रूप से सुंदर दिखने के बजाय अपने कर्मों से सुंदर दिखना आवश्यक है । **1**

उ.2. (ज) अपठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **(6)**

(1) उत्तर लिखिए। **2**

(i) स्नेह (ii) प्यार

(2) आकृति में उत्तर लिखिए। **2**

(i) अच्छा प्रयत्न यही है - जो गिरे हुए को उठा सके।

(ii) यही अधोगति है - जो प्यार से किसी को उठा न पाए।

(3) पद्यांश की तीसरी और चौथी पंक्ति का संदेश लिखिए। **2**

कवि भवानी प्रसाद मिश्र प्रेम की श्रेष्ठता प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि प्रेम द्वारा असंभव कार्य को भी संभव किया जा सकता है। हमारे जीवन में यदि अंधकार और नकारात्मक भाव हो, तो प्रेम के द्वारा उसे प्रकाशित किया जा सकता है। सकारात्मकता का भाव जाग सकता है। उसी प्रकार बाहरी समाज में निहित द्वेष, ईर्ष्या व नकारात्मकता को प्रेम के द्वारा सद्मार्ग पर लाया जा सकता है। कवि के मतानुसार प्रेम जीवन में सरलता, सहृदयता व मानवता का प्रतीक है।

विभाग 3 - पूरक पठन

उ.3. (अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए। **(4)**

(1) आकृति पूर्ण कीजिए।

(i) **1**

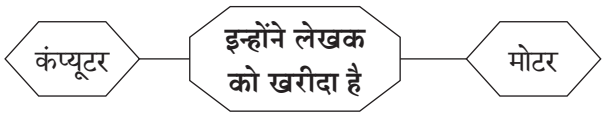

(ii) **1**

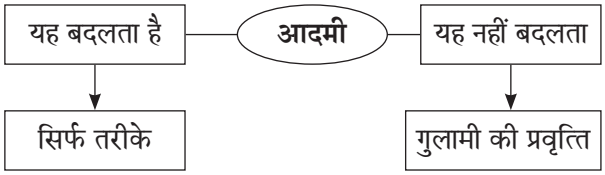

(2) आधुनिक सभ्यता एक सोच है, विचार है; जो व्यक्ति को इस दुनिया के प्रति जागरूक बनाता है, लेकिन मनुष्य इसे समझ नहीं पाता। इसका प्रभाव मनुष्य के जीवन पर पड़ा है। सुई से लेकर रोबोट तक नई-नई चीजों का आविष्कार हो गया है। मानव इन वस्तुओं का उपभोग ले रहा है। ये वस्तुएँ मनुष्य की जरूरतें पूरी करने के लिए होती हैं। इस तथ्य को इंसान भूल गया है और वह इन चीजों पर पूरी तरह से निर्भर हो गया है। इन चीजों के बिना वह रह नहीं सकता। आधुनिक सभ्यता मनुष्य पर इतनी हावी हो गई है कि वह पलभर के लिए भी इनसे अलग नहीं रह सकता। इसलिए कहा गया है कि आधुनिक सभ्यता के इस युग में व्यक्ति चीजों का गुलाम हो गया है। **2**

उ.3. (आ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(1) (i) **कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

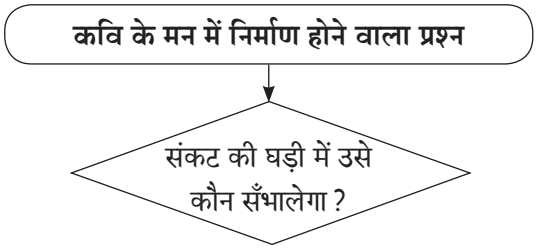

(ii) **निम्नलिखित हाइकु द्वारा मिलने वाला संदेश लिखिए।** **1**

(1) कर्म करते रहिए, फल की अपेक्षा मत कीजिए।

(2) प्रतिकूल परिस्थिति में भी व्यक्ति को आशा नहीं छोड़नी चाहिए।

(2) प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में कर्मशील रहना चाहिए। कर्म करने से व्यक्ति को मनचाहा फल अपने आप प्राप्त हो जाता है। जो मनुष्य कर्म पर आस्था रखता है, वह कर्मशील कहलाता है। हमें अपना काम तन्मयता व एकाग्रता से करना चाहिए। कर्म करने से ही मनुष्य संपत्ति, यश व वैभव पा सकता है। समाज में प्रतिष्ठित व उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करने वाले व्यक्तियों की जीवन शैली का अध्ययन करें, तो उनकी सफलता के पीछे उनके अनवरत संघर्ष एवं परिश्रम के होने का पता चलता है। वे अपने कर्म के कारण ही महान बनते हैं। इसलिए कहा गया है - 'कर्म ही पूजा है।' **2**

विभाग 4 - व्याकरण

उ.4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(1) (i) **निम्नलिखित वाक्य में आए हुए संज्ञा शब्दों को रेखांकित करके उनके भेद लिखिए।** **1**

सोना-चाँदी : द्रव्यवाचक संज्ञा

(ii) **निम्नलिखित वाक्य के रिक्त स्थानों में उचित सर्वनाम का प्रयोग कीजिए।** **1**

मैं इसके पहले उसे मना करता।

(2) (i) **निम्नलिखित वाक्य में से अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए।** **1**

आगे : क्रियाविशेषण अव्यय

(ii) **निम्नलिखित अव्यय शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए।** **1**

वाक्य - पता नहीं उसके बाद क्या हुआ ?

(3) काल परिवर्तन कीजिए।

(i) सरकार एक ही टैक्स लगाएगी। **1**

(ii) आप इतनी देर से नाप-तौल कर रहे हैं। **1**

(4) **तालिका पूर्ण लिखिए ।** **2**

संधि	संधि-विच्छेद	भेद
सदैव	सदा + एव	स्वर संधि
दुस्साहस	दु: + साहस	विसर्ग संधि

(5) (i) **रचना के आधार पर निम्न वाक्य के भेद पहचानिए।** **1**

अधिकारियों के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान और उत्सुकता छा गई। (सरल वाक्य)

(ii) **सूचना के अनुसार निम्न वाक्य का प्रकार बदलिए** **1**

ज्यादा बातें नहीं हुईं।

(6) (i) **मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए।** **1**

गुजर-बसर करना : आजीविका चलाना

वाक्य: रामू मजदूरी करके अपने परिवार का **गुजर-बसर करता था।**

(ii) **निम्न वाक्यों में अधोरेखांकित शब्द समूह के लिए कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए।** **1**

करामत अली हौले-से लक्ष्मी (की पीठ) पर **हाथ फेरने लगा।**

(7) **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके फिर से लिखिए।**

(i) करामत अली ने रमजानी को गाय के देखभाल की जिम्मेदारी सौंपी। **1**

(ii) आचार्य अपने शिष्यों से मिलना चाहते थे। **1**

(8) **निम्न वाक्यों में से मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया पहचानकर लिखिए।** **1**

मुख्य क्रिया - रखना सहायक क्रिया - सके (सकना)

(9) **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए।** **1**

अ.क्र	क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
(i)	माँगना	मँगाना	मँगवाना
(ii)	तोड़ना	तुड़ाना	तुड़वाना

(10) **निम्नलिखित वाक्यों में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग कर वाक्य पुन: लिखिए।** **1**

केवल टीका, नथुनी और बिछिया रख लिए थे।

(11) **निम्नलिखित वाक्य के रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित कारक चिह्नों से कीजिए और कारक का नाम लिखिए।** **1**

मैं बंडल **को** खोलकर देखने लगा।

को - कर्म कारक

विभाग 5 - रचना विभाग

उ.5. (अ) 5

(i) दिनांक - ५ मार्च, २०१८

सेवा में,

श्रीमान व्यवस्थापक जी,

सोनिया औषधि भंडार,

शहीद चौक, जालंधर।

विषय : औषधियाँ मँगवाने के लिए प्रार्थना पत्र।

माननीय महोदय,

मैं आपका नियमित ग्राहक हूँ। मुझे जिन औषधियों की आवश्यकता होती है, वे सभी आपके यहाँ आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं।

पिछले तीन-चार सालों से मैं आपके यहाँ से औषधियाँ खरीद रहा हूँ। कुछ दिन पहले ही मैंने आपके औषधि भंडार से कुछ दवाएँ मँगवाई थीं। उन दवाओं के सेवन से मुझे बहुत आराम मिला है। कुछ और आयुर्वेदिक औषधियाँ मँगवाना चाहता हूँ। पाँच सौ रुपए का पोस्टल ऑर्डर पत्र के साथ भेज रहा हूँ।

दवाओं की सूची इस प्रकार है :

क्रम संख्या	औषधि का नाम	मात्रा
१	कायम चूर्ण	३०० ग्राम
२	च्यवनप्राश	८०० ग्राम
३	द्राक्षासव	५ बोतल
४	शहद	१ बोतल

आशा है कि आप शीघ्र ही औषधियाँ भेजने की कृपा करेंगे।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

धन्यवाद!

भवदीय,

रमेश पांडे।

नाम : रमेश पांडे

पता : अमृतनगर, फिरोजपुर।

ई-मेल आईडी : ramesh@gmail.com

अथवा

(ii)	दिनांक - मार्च २५, २०१८ प्रिय पंकज स्नेह! आशा है स्वस्थ होगे। मैं भी यहाँ कुशल हूँ। मित्र! इस बार मेरा जन्म-दिन धूमधाम से मनाने की तैयारियाँ है। अत: तुम २० मार्च की तिथि मेरे लिए सुरक्षित कर लो। तुम १९ मार्च की रात तक पहुँच जाओ, ताकि सभी कार्यक्रमों में शामिल हो सको। कार्यक्रम इस प्रकार है - प्रात: ७ बजे हवन-यज्ञ होगा। हवन के बाद धार्मिक प्रवचन होंगे। इसके बाद मित्र-मंडली रंगारंग कार्यक्रम पेश करेगी। इसके बाद सहभोज होगा। माताजी व पिताजी को चरण-स्पर्श। १९ मार्च को आना न भूलना। तुम्हारा, राकेश नाम : राकेश कुमार पता : ६३७-ए, सेक्टर-१२, इस्पात नगर, बोकारो। ई-मेल आईडी : rakesh123@gmail.com	5
(2)	(i) कौन विश्वबंधु होता है? (ii) परोपकार मनुष्य के लिए कैसा जादू है? (iii) परोपकारी मनुष्य किसके समान होता है? (iv) परोपकार से मनुष्य को क्या मिलता है? (v) मनुष्य के सभी गुणों का मूल क्या है?	5
उ.6.		
(1)	**वृत्तांत लेखन ।** दिनांक १५ सितंबर, २०१८ : मुंबई : इस दिन भारती विद्यालय, मुंबई में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया था। प्रमुख अतिथि के रूप में हिंदी भाषा की सुप्रसिद्ध लेखिका श्रीमती वीणा चौधरी जी कार्यक्रम में उपस्थित थीं। सुबह ठीक १०:०० बजे कार्यक्रम की शुरुआत हई। विद्यालय के विद्यार्थी प्रमुख शैलेश कुमार ने पुष्पगुच्छ देकर मुख्य अतिथि महोदया जी का स्वागत किया। स्कूल की प्राचार्या श्रीमती विमला जी ने हिंदी दिवस का महत्त्व बताया। उन्होंने 'आज हिंदी भारत के हर क्षेत्र में ही नहीं, अपितु विदेशों में भी बोली व जानी जाती है' इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। विद्यालय में हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता, हिन्दी भाषण-प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया था। विद्यालय के कुछ छात्रों ने नृत्य व नाटिका का रँगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत कर इस दिन की शोभा में चार-चाँद लगा दिए। कक्षा दसवीं के एक छात्र ने अपने प्रभावपूर्ण भाषण में 'हिन्दी दिवस' के अवसर पर सभी का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद किया। सुबह १२ बजे कार्यक्रम का समापन हुआ।	5

(2) **निम्न मुद्दों के आधार पर विज्ञापन तैयार कीजिए।** **5**

एच.डी.एफ.सी., एस.बी.आई.
बैंक में चेक पिक-अप के लिए
सेंट्रल, वेस्टर्न, हार्बर एरिया के लिए जानकार लड़के चाहिए।
फिक्स ५०००/- + इंसेंटिव, कमाएँ ८०००/-.
बायोडेटा के साथ मिलें:
यूनाइटेड प्रा. लि., ऑफिस नं.-२, शुक्ला हाउस गार्डन,
चारकोप, कांदिवली (प.),
मुंबई - ४०० ०६७.
फोन: ६४५१ ९१९२ / ६२२१ १११

(3) **लालच बुरी बला है।** **5**

एक बहुत दुखी और कंगाल भिखारी था। वह 'लक्ष्मी माँ, लक्ष्मी माँ' बोलता और धन पाने के लिए उनसे प्रार्थना करता रहता था। एक दिन लक्ष्मी जी उस पर प्रसन्न होकर उसके सामने प्रकट हुईं। लक्ष्मी जी ने उस भिखारी से कहा, ''मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। तुम कोई भी वरदान माँग सकते हो।''

भिखारी ने लक्ष्मी जी से सोने की मुहरें माँगी। लक्ष्मी जी ने कहा, ''ठीक है, मैं तुम्हें सोने की मुहरें दूँगी, पर एक शर्त है। जो मुहरें जमीन पर गिरेंगी, वे मिट्टी बन जाएँगी।''

भिखारी ने लक्ष्मी जी के सामने अपनी फटी-पुरानी झोली फैलाई। लक्ष्मीजी ने कुछ मुहरें झोलीं में डालीं और पूछा, ''बस?'' भिखारी ने कहा, ''नहीं माँ, कुछ और दीजिए।'' इस प्रकार वह लालच में पड़कर अधिक से अधिक मुहरें माँगता रहा। लक्ष्मी माँ उसकी झोली में मुहरें डालती रहीं।

भिखारी की फटी-पुरानी झोली भर गई और मुहरों का वजन सह न सकी। वह एकदम से फट गई और सारी मुहरें जमीन पर बिखर गईं। शर्त के अनुसार वे सब मुहरें मिट्टी बन गईं। भिखारी बहुत पछताया। उसने लक्ष्मी माता से कुछ कहना चाहा, परंतु तब तक वे अदृश्य हो चुकी थीं।

सीख: इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि लोभ मनुष्य का शत्रु है। हमें अधिक लोभ नहीं करना चाहिए।

(4)(i) **'यदि मेरा घर अंतरिक्ष में होता'** **7**

हर इंसान का अपना एक आशियाना होता है। वह अपने आशियाने को बहुत सुंदर तरीके से सजाता है। सभी चाहते हैं कि उसका घर बहुत ही खूबसूरत एवं दूसरे से अनूठा हो। इसलिए इंसान प्रकृति की गोद में अपना एक फार्म हाउस भी तैयार करता है। मैं स्वयं भी अपने घर के बारे में सोचता हूँ। सोचते-सोचते अचानक मेरे मन में यह प्रश्न पैदा हुआ कि यदि मेरा घर अंतरिक्ष में होता, तो.....।

बचपन से ही मुझे आसमान, सितारे, चाँद, सूरज आदि का बहुत ही आकर्षण रहा है। उन्हें देखकर मुझे खुशी का अनुभव होता है। इसलिए काश! मेरा घर अंतरिक्ष में होता ... बहुत ही मजा आता। तब मैं अपने आप पर गर्व महसूस करता, क्योंकि दुनिया के कुछ गिने-चुने लोग ही अब तक अंतरिक्ष की सैर कर पाए हैं। मैं भी बड़े मजे से अंतरिक्ष की सैर करता। वहाँ पर मुझे सारे अजीबो-गरीब अनुभव होते। वहाँ पर रहकर मैं कभी रो नहीं सकता, क्योंकि वहाँ पर इंसान के आँसू कभी भी नीचे नहीं गिर सकते। वहाँ का वातावरण अलग प्रकार का होता है। अंतरिक्ष में जब हर दिन सूर्य के दर्शन करूँगा, तो वह मुझे काला दिखाई देगा।

यदि मेरा घर अंतरिक्ष में होता; तो मैं उल्कापिंड, आकाशगंगा आदि को निकट से देखता। उनके बारे में जानकारी हासिल करता। अंतरिक्ष में रहकर मैं इस बात का अनुभव ले पाता कि दो धातु के टुकड़े एक-दूसरे से स्पर्श हो जाने से वे स्थायी रूप से जुड़ जाते हैं।

अंतरिक्ष में रहकर मैं नई-नई खोज करता। कैंसर जैसी भयानक बीमारी पर नियंत्रण पाने के लिए औषधि का निर्माण करता।

ये तो सारी हुई कल्पना की बातें। वास्तव में यदि मुझे अंतरिक्ष में जाना है, तो मुझे पहले मन लगाकर पढ़ाई करनी पड़ेगी और आगे चलकर अंतरिक्ष-विज्ञान का अभ्यास करना पड़ेगा। इसके लिए मैं प्रतिबद्ध हूँ।

(ii) **किसी पालतू प्राणी की आत्मकथा** **7**

''ठहरिए, कहाँ जा रहे हो? तनिक रुककर मेरी कहानी सुनिए। मैं हूँ तकदीर का मारा, बेचारा, वृद्ध जानवर। मैं एक अल्सेसिशयन प्रजाति का कुत्ता हूँ। मैं भारत में इटली से आया था। उस वक्त मैं बहुत छोटा था। दरअसल मुझे कुछ लोगों ने मेरे माँ-बाप से अलग कर भारत में बेचने के लिए भेजा था। जब मुझे भारत में लाया जा रहा था तब मैं बहुत दुखी था मुझे बार-बार अपने माता-पिता की याद आ रही थी; लेकिन मेरा दुखड़ा कौन सुनता?

प्राणियों की एक बड़ी दुकान में मुझे बेचने के लिए रखा गया। मेरी कीमत भी अधिक थी। हर दिन कई लोग आते व मुझे देखते रहते। एक दिन एक अमीर आदमी दुकान में आया और उसने मुझे खरीद लिया। वह मुझे अपने घर ले गया। उसका घर क्या था? बहुत ही बड़ा बंगला था उसका। उसके घर में ढेर सारे नौकर थे। मेरे लिए एक अलग कमरे की व्यवस्था की गई। उसका एक बेटा था। वह मुझे देखकर बहुत ही खुश हुआ और मेरे साथ खेलने लगा। जल्द ही हम दोनों बहुत अच्छे दोस्त बन गए। आहिस्ता-आहिस्ता मैं अपने माता-पिता को भूल गया और उस संपन्न घर में बड़े ही आराम से रहने लगा।

समय अपनी अबाध गति से बीतता रहा। मैं बड़ा हो गया। मैं उनके घर की रखवाली करने लगा। मेरे होते हुए किसी की क्या मजाल कि कोई किसी चीज को छू ले। यहाँ तक कि घर के सारे नौकर भी मुझसे डरते थे। मेरे लिए खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी। दिन में चार बार मुझे खाने के लिए अच्छी-अच्छी चीजें दी जाती थीं। मैं भी भरपेट खाना खाता था और बंगले में चारों ओर स्वच्छंद विचरण करता रहता था। घर के सभी सदस्य मुझसे बहुत प्यार करते थे। मुझे ऐसा लगने लगा था कि मानो, मेरे मन की मुराद पूरी हो गई हो।

वृद्धावस्था से क्या कोई निजात पा सकता है? मैं भी वृद्ध हो गया। चलने-फिरने में असमर्थ हो गया। तब घर के सारे सदस्यों पर मैं बोझ बनने लगा। घर के लोग मुझे खाना तो देते थे, पर पहले जैसा प्यार नहीं करते थे; मुझे दुलारते नहीं थे। मैं बीमार रहने लगा। तब एक दिन घर के मालिक ने मुझे अपनी आलीशान कार में बिठाकर घर से दूर सड़क के एक किनारे छोड़ दिया। तब से मैं अकेला हो गया हूँ। अब मेरे पास जीवन जीने का कोई अर्थ नहीं रह गया है। यह इंसान कितना निर्दयी और स्वार्थी है। उसे जब अपना जी बहलाने के लिए किसी की जरूरत होती है; तब वह उसके लिए सब कुछ करने के लिए तैयार हो जाता है और जब उसका जी भर जाता है, तब वह उस चीज को अपने जीवन से दूर कर देता है। क्या खूब! आखिर, यही होते हैं इंसान के जीवन के असली रंग। खैर कोई बात नहीं, जिस ईश्वर ने मुझे जन्म दिया है, आखिर वही मेरी हिफाजत करेगा।''

❖❖❖